टिप्पणी

1

हिन्दुस्तानी संगीत का परिचय

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत मूल रूप से गायन प्रधान रहा है। यह तथ्य हमें स्वयं 'संगीत' शब्द से ही ज्ञात हो जाता है, जिसका अर्थ है 'सम्यक रूप से गायन'। अधिकतर विधाओं की मूलत: गायन प्रस्तुति एवं वाद्यों की मानव कंठ के अनुसरण के उद्देश्य हेतु संरचना हुई। संगीत के अंतर्गत गायन, वादन तथा नृत्य सम्मिलित माने गये हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप–

- नाद, श्रुति, स्वर आदि तत्वों का वर्णन कर सकेंगे;
- नाद के दो मुख्य भेद आहत और अनाहत को स्पष्ट कर सकेंगे;
- सप्तक का अर्थ तथा उसके प्रकार का उल्लेख कर सकेंगे;
- अलंकार और संगीत में उसके प्रयोग से होने वाले लाभों का वर्णन कर सकेंगे।

1.1 संगीत क्या है

संगीत दो शब्दों के मेल से बना है सम् + गीत। सम् का अर्थ है सम्पूर्ण या सम्यक् और गीत का अर्थ है – गायन। दोनों को मिलाकर इसका अर्थ बनता है – सम्पूर्ण

टिप्पणी

गायन। अर्थात् निर्धारित नियमों के अनुसार गायन करना ही संगीत है परन्तु वास्तव में अकेला गायन कला ही संगीत नहीं है। वादन और नर्तन कलाओं का भी समावेश है। संगीत के प्रकांड विद्वान पं. शार्ङ्गदेव के निम्न शब्दों द्वारा इस बात की पुष्टि होती है –

'गीत, वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते।'

–संगीतरत्नाकर

1.2 संगीत की पद्धतियाँ

आजकल संगीत की दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं–

उत्तर भारतीय अथवा हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति तथा दक्षिण भारतीय अथवा कर्नाटक संगीत पद्धति।

उत्तर भारतीय अथवा हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति

यह पद्धति दक्षिण के चार प्रान्तों को छोड़कर शेष सम्पूर्ण भारत में प्रचलित है। इसके अतिरिक्त भारत के निकटवर्त्ती देशों नेपाल, बांग्लादेश तथा पाकिस्तान में भी इसका प्रचलन है।

दक्षिण भारतीय अथवा कर्नाटक संगीत पद्धति

यह पद्धति दक्षिणी प्रान्तों – केरल, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश तथा तमिलनाडु में प्रचलित है। संगीत की ये दोनों पद्धतियाँ यद्यपि एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं फिर भी इन दोनों में बहुत-सी समानताएं है यथा –

1. दोनों पद्धतियाँ एक सप्तक में बाईस श्रुतियाँ मानती हैं।
2. दोनों पद्धतियाँ एक सप्तक में कुल बारह स्वर मानती हैं।
3. दोनों पद्धतियाँ ठाठ राग सिद्धांत को मानती हैं।
4. दोनों पद्धतियों में संगीत राग और ताल पर आधारित है।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. संगीत में किन-किन कलाओं का समावेश है?
2. संगीत की तीन कलाओं में कौन-सी कला प्रमुख है?
3. संगीत की कितनी पद्धतियाँ हैं? उनके नाम लिखें।

टिप्पणी

1.3 नाद क्या है

नाद वह मधुर ध्वनि है जो किसी भौतिक वस्तु (मुख अथवा अन्य किसी पदार्थ) से उत्पन्न होती है तथा किसी भौतिक माध्यम (ठोस, तरल अथवा गैस) के द्वारा कानों तक पहुँचती है। यह प्रक्रिया उस वस्तु में कम्पन अथवा आन्दोलन से होती है। ये आन्दोलन जब नियमित रूप से होते हैं तो उनसे उत्पन्न ध्वनि मधुर और संगीतोपयोगी होती है, इसी ध्वनि को **नाद** कहते हैं। यदि आन्दोलन अनियमित हों, तो वह कोलाहल युक्त ध्वनि होती है, जिसका संगीत में प्रयोग नहीं होता।

1.4 नाद की परिभाषा

नाद शब्द 'न' और 'द' इन दो अक्षरों का समुच्चय है। 'न' यानि 'नकार' प्राण का तथा 'द' यानि 'दकार' अग्नि का द्योतक है। इसलिए प्राण तथा अग्नि के संयोग से उत्पन्न इस समुच्चय को **नाद** कहते हैं।

नाद के दो प्रकार हैं – **आहत नाद** तथा **अनाहत नाद।** जहां आहत नाद दो वस्तुओं के घर्षण से उत्पन्न होता है, वहीं अनाहत नाद बाहरी निमित्त के बिना साधना द्वारा साध्य है। आहत नाद का संगीत से सम्बन्ध है, अनाहत का संगीत में उपयोग नहीं होता।

1.4.1 आहत नाद – इस नाद की तीन मुख्य विशेषताएं हैं –

तारता, तीव्रता तथा **गुण**

- **तारता** – तारता से तात्पर्य नाद के ऊँचे नीचेपन से है। नाद की तारता ध्वन्योत्पादक वस्तु की आवृत्ति (आन्दोलन संख्या) पर निर्भर करती है। आवृत्ति जितनी कम होगी नाद उतना नीचा होगा तथा आवृत्ति जितनी अधिक होगी, नाद उतना ऊँचा होगा। जैसे 'स' की आन्दोलन संख्या 240 है, 'रे' की 270 अत: 'स' से 'रे' की आवृत्ति अधिक होने से 'रे' की ध्वनि 'स' से ऊँची है तथा 'स' की आवृत्ति 'रे' से कम होने के कारण 'स' का नाद 'रे' के नाद से नीचा है। संगीत में लगभग साठ आवृत्ति से लेकर चार हज़ार तक की आन्दोलन संख्या के नाद का प्रयोग ही सम्भव है।
- **तीव्रता** – तीव्रता से तात्पर्य नाद के छोटे-बड़ेपन अथवा उसके धीमा और तेज़ होने से है। यह विशेषता नाद उत्पन्न करने के लिये प्रयुक्त बल पर निर्भर करती

टिप्पणी

है। यदि किसी तार अथवा तबले के पूड़े पर धीमे से आघात करें तो वह नाद अल्प दूरी तक सुनाई देगा परन्तु यदि इन पर ज़ोर से आघात करें अथवा कन्ठ से बलपूर्वक ध्वनि उत्पन्न करने का प्रयत्न करें तो वह नाद अधिक दूरी तक सुनाई देगा। यही नाद की तीव्रता है।

- **गुण** – नाद की उत्पत्ति के अनेक माध्यम हैं। विभिन्न माध्यमों से उत्पन्न जो भिन्न-भिन्न रूप ध्वनि ग्रहण करती है उसे नाद की **जाति** अथवा **गुण** कहते हैं। नाद के इस गुण से यह मालूम होता है कि उत्पन्न नाद किसी वाद्य विशेष का है अथवा किसी व्यक्ति विशेष के कन्ठ का। माध्यम की यह विभिन्नता ही नाद की जाति है।

1.4.2. अनाहत नाद – इस नाद का सम्बन्ध केवल मानव देह से है, बाह्य उपकरणों यथा वाद्यों इत्यादि से नहीं। यह नाद ईश्वर प्राप्ति का साधन है और उसका स्वरूप भी। इसीलिये इसे ब्रह्मरूपा भी कहा गया है। योगीजन कठोर योग साधना द्वारा इसकी प्राप्ति करते हैं तथा नित्य श्रवण करने में समर्थ होते हैं। यह अजन्मा तथा स्वयंभू है। संगीत में इसका उपयोग नहीं होता।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. नाद के कितने भेद हैं, उनके नाम लिखिए।
2. आहत नाद की मुख्य विशेषताएं कौन-कौन सी हैं।
3. नाद की तीव्रता तथा तारता से आप क्या समझते हैं?
4. अनाहत नाद का श्रवण कौन कर सकता है?
5. क्या अनाहत नाद संगीतोपयोगी है?

1.5 श्रुति क्या है

श्रुति नाद का लघुतम रूप है। इस शब्द की परिभाषा 'संगीत रत्नाकर' में इस प्रकार उपलब्ध है '**श्रवणाच्छ्रुतयो मताः** भावार्थ यह है कि जिस लघु ध्वनि को कान ग्रहण करें वह श्रुति है। संगीत में यही श्रुति स्वर का आधार है तथा इसी के द्वारा रागों की रचना सम्भव है।

1.6 श्रुति संख्या

श्रुति संख्या के विषय में विद्वानों में विभिन्न मत प्रचलित हैं। इनमें से मुख्य तीन हैं। एक मत के अनुसार श्रुतियों की संख्या एक सप्तक में बाईस है, दूसरे के मतानुसार छियासठ

टिप्पणी

है तथा तीसरे मत के अनुसार श्रुतियों की संख्या अनन्त है। इनमें से प्रथम मत अर्थात बाईस श्रुतियों वाले मत को ही सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. संगीत रत्नाकार के अनुसार श्रुति की परिभाषा क्या है?
2. श्रुति संख्या के विषय में विद्वानों में कितने मत हैं?
3. श्रुति संख्या के विषय में किस मत को मान्यता प्राप्त है?

1.7 स्वर क्या है

स्वर को स्वयं में स्निग्ध, अनुरणनात्मक श्रोताओं के चित्त का रंजन करने योग्य ध्वनि के रूप में परिभाषित किया गया है।

1.7.1 स्वरों की संख्या

वैदिक काल में आरम्भ में केवल तीन स्वरों का प्रयोग होता था, जिनके नाम थे–उदात्त, अनुदात्त, स्वरित। उदात्त-ऊँचा, अनुदात्त-नीचा तथा स्वरित-बीच का। धीरे-धीरे इनका क्रमिक विकास हुआ। तीन से चार, चार से पाँच और पाँच से सात वैदिक स्वर विकसित हुए। तत्पश्चात् लौकिक सप्त स्वरों का विकास हुआ। इनका विधिवत् उल्लेख सर्वप्रथम भरत के नाट्यशास्त्र ग्रन्थ में मिलता है। इन्हें निम्न संज्ञाओं से सम्बोधित किया गया।

षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। इन्हीं को 'स', 'रे', 'ग', 'म', 'प', 'ध', 'नि' इन संक्षिप्त नामों से सम्बोधित किया जाता है जो क्रियात्मक रूप में व्यवहार में प्रचलित हैं। इन स्वरों की स्थापना सप्तक की बाईस श्रुतियों पर निम्न सिद्धांत के आधार पर की गई है–

'चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपंचमा
द्वे द्वे निषाद गान्धारौ त्रिस्त्रीऋषभधैवतो।'

अर्थात् स, म, प की चार-चार श्रुतियाँ, रे, ध की तीन-तीन श्रुतियाँ तथा ग, नि, की दो-दो श्रुतियाँ हैं। इन्हें निम्न तालिका द्वारा इस प्रकार दर्शाया जा सकता है–

टिप्पणी

श्रुति संख्या	स्वरनाम	श्रुति संख्या	स्वरनाम	श्रुति संख्या	स्वरनाम
1		8		14	
2		9	गन्धार	15	
3		10		17	पंचम
4	षड्ज	11		18	
5		12		19	
6		13	मध्यम	20	धैवत
7	ऋषभ			21	
				22	निषाद

इस प्रकार ये सात शुद्ध स्वर हुए। भरत ने इनके अतिरिक्त दो साधारण स्वर-अन्तर गान्धार तथा काकली निषाद भी कहे हैं। आधुनिक ग्रन्थकारों के अनुसार सात शुद्ध स्वरों के अतिरिक्त विकृत स्वरों की संख्या पाँच निश्चित की गई है। संक्षेप में शुद्ध तथा विकृत स्वरों को इस प्रकार समझ सकते हैं।

1.7.2 शुद्ध स्वर – जब स्वर अपनी निश्चित श्रुतियों पर स्थित होते हैं तो उन्हें शुद्ध स्वर कहते है जैसे अपने मूल रूप में प्रतिष्ठित **स**, **रे**, **ग**, **म**, **प**, **ध**, **नि**, ये सात शुद्ध स्वर हैं। इन सात शुद्ध स्वरों में से षड्ज और पंचम ये दो अचल स्वर है क्योंकि ये अपने निश्चित स्थान पर स्थिर रहते हैं, अत: इनके दो रूप नहीं हो सकते।

1.7.3 विकृत स्वर षड्ज और पंचम के अतिरिक्त अन्य स्वर अपने नियत स्थान से परिवर्तित भी हो सकते हैं अत: इन्हें चल या विकृत स्वर भी कहते हैं। उनकी यह विकृत अवस्था दो रूपों में होती है -कोमल विकृत तथा तीव्र विकृत । **'रे'**, **'ग'**, **'म'**, **'ध'**, **'नि'**, स्वरों को इस श्रेणी में रखा जा सकता है। इनमें से **'रे'**, **'ग'**, **'ध'**, **'नि'**, अपने स्थान से पूर्व की श्रुतियाँ लेकर कोमल रूप धारण करते हैं तथा मध्यम अपने नियत स्थान से ऊपर की श्रुतियाँ लेकर तीव्र रूप धारण करता है। कोमल स्वर की पहचान के लिये (भातखन्डे स्वरलिपि के अनुसार) स्वर के नीचे पड़ी रेखा तथा तीव्र स्वर की पहचान के लिये स्वर के ऊपर खड़ी रेखा का चिन्ह लगाया जाता है।

पाठगत प्रश्न 1.4

1. वैदिक स्वरों का विकास किस क्रम से आरम्भ हुआ?
2. लौकिक स्वरों का विधिवत् उल्लेख सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में मिलता है?
3. नाट्यशास्त्र में कितने स्वरों का उल्लेख किया गया है?
4. सप्त स्वरों की स्थापना किन-किन श्रुतियों पर की गई है?
5. कौन-कौन से स्वर विकृत रूप ले सकते हैं?

टिप्पणी

1.8 सप्तक की परिभाषा

संगीत में नाद, श्रुति तथा स्वर के पश्चात् सप्तक का अध्ययन क्रम प्राप्त है। सामान्य भाषा में सप्तक से तात्पर्य सात के समूह से है – 'सप्तक सप्तानां समूह:'। इसी का अभिप्राय संगीत में सप्त स्वरों के क्रमिक समूह से लिया गया है। ध्वनि के आधार पर यद्यपि अनेक सप्तक निर्मित हो सकते हैं परन्तु संगीत में प्राय: तीन ही सप्तकों का प्रयोग किया जाता है। सप्तक को स्थान का नाम भी दिया गया है। इन तीन सप्तकों को संक्षेप में इस प्रकार समझा जा सकता है –

1.8.1 मन्द्र सप्तक

मन्द्र का अर्थ है नीचा। जो सप्तक सामान्य ध्वनि से दुगुनी नीची ध्वनि के लिये प्रयुक्त होता है, उसे मन्द्र सप्तक कहते हैं। गायन में इस सप्तक के स्वरों का उच्चारण करने से कंठ पर ज़ोर पड़ता है। लिखने में मन्द्र सप्तक के स्वरों की पहचान के लिये उनके नीचे बिन्दी लगा दी जाती है जैसे स़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नि़। (ये चिन्ह भातखन्डे पद्धति के अनुसार हैं)

1.8.2 मध्य सप्तक

मध्य का अर्थ है बीच का अथवा सामान्य। गायन–वादन का अधिक प्रदर्शन इसी सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक के स्वरों से इस सप्तक के स्वरों की ध्वनि दुगुनी ऊँची होती है। गायन में इस सप्तक के स्वरों का उच्चारण करने से कन्ठ पर ज़ोर पड़ता है। मध्य सप्तक के स्वरों को लिखने के लिये किसी भी चिन्ह की आवश्यकता नहीं जैसे – **स, रे, ग, म, प, ध, नि।** ये मध्य सप्तक के स्वर हैं।

1.8.3 तार सप्तक –

मध्य सप्तक से ऊँचा गाने के लिये तार सप्तक के स्वरों का प्रयोग किया जाता है। इस सप्तक के स्वरों की ध्वनि मध्य सप्तक के स्वरों से दुगुनी ऊँची होती है। तार सप्तक के स्वरों के उच्चारण के लिये तालू तथा मस्तिष्क पर ज़ोर पड़ता है। इन स्वरों को लिखने के लिये स्वर के ऊपर बिन्दी लगाते हैं जैसे सं, रें, गं, मं, पं, धं, निं।

(ये चिन्ह भातखन्डे पद्धति के अनुसार हैं)

गायन और वादन में प्राय: इन्हीं तीन सप्तकों का प्रयोग होता है। सात शुद्ध स्वरों के साथ उनके पाँच विकृत रूप भी सप्तक के अन्तर्गत माने जाते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 1.5

1. संगीत के संदर्भ में सप्तक से क्या अभिप्राय है?
2. संगीत में कितने सप्तकों का प्रयोग किया जाता है, उनके नाम बताइये?
3. तीन सप्तकों को लिखते समय उनमें कैसे अन्तर रखा जाता है?
4. तीन सप्तकों के स्वर लगाते समय शरीर के किस भाग पर विशेष प्रभाव पड़ता है?
5. क्या सप्तक के सात शुद्ध स्वरों के साथ शेष पांच विकृत स्वरों का गायन वादन में प्रयोग होता हैं?

1.9 वर्ण क्या है

यद्यपि वर्ण के कई अर्थ हैं जैसे अक्षर, रंग, जाति, श्रेणी आदि परन्तु संगीत में इसका अर्थ गायन और वादन की विभिन्न क्रियाओं से है –

'गान क्रियोच्यते वर्ण:'

क्रिया से तात्पर्य गायन में स्वरों के विभिन्न चलन अथवा गति से है। इस क्रिया के आधार पर वर्ण कुल चार कहे गए हैं –

1.9.1 स्थायी वर्ण – स्थायी का अर्थ है – स्थिर होना। जब एक ही स्वर का निरंतर अथवा एक से अधिक बार उच्चारण किया जाता है तो उसे स्थायी वर्ण कहते हैं जैसे स...., रे.... अथवा ससस, रेरेरे, गगग इत्यादि।

1.9.2 आरोही वर्ण – नीचे के स्वरों से ऊपर के स्वरों की ओर गमन करने को अर्थात स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोही वर्ण कहते हैं जैसे **स रे ग म प ध** अथवा **स ग म ध**। इसमें प्रत्येक स्वर का प्रयोग होना अनिवार्य नहीं। राग में प्रयुक्त स्वरों के अनुसार स्वरों का क्रमभंग भी हो सकता है परन्तु प्रयोग विधि आरोहात्मक होनी चाहिये।

1.9.3 अवरोही वर्ण – स्वरों के उतरते क्रम को अर्थात ऊपर के स्वरों से नीचे के स्वरों का प्रयोग करने की विधि को अवरोही वर्ण कहते हैं। आरोही वर्ण के समान इसमें भी समस्त स्वरों का प्रयोग अनिवार्य नहीं है। राग के अनुसार उनमें कुछ स्वर वर्जित भी हो सकते हैं जैसे – **सं नि प म ग**।

1.9.4 संचारी वर्ण – स्थायी आरोही तथा अवरोही वर्णों के मिश्रण को संचारी वर्ण कहते हैं अर्थात उपरोक्त तीन वर्णों को मिलाने से संचारी वर्ण की उत्पत्ति होती है जैसे

टिप्पणी

– स रे ग प, ध ग प, ग प ध सं, सं सं सं, ध ध ध प, ग प ध प, ग, रे, स यह संचारी वर्ण हुआ।

पाठगत प्रश्न 1.6

1. वर्ण का संगीत के संदर्भ में क्या अभिप्राय है?
2. कुल कितने वर्ण हैं? नाम बताइये।
3. स्थायी वर्ण से क्या तात्पर्य है?
4. आरोही तथा अवरोही वर्ण से आप क्या समझते हैं?
5. संचारी वर्ण किसे कहते हैं?

1.10 अलंकार की परिभाषा

अलंकार शब्द का सामान्य अर्थ है 'आभूषण'। जिस प्रकार आभूषण शरीर को सुन्दर बनाता है, संगीत की सुन्दर प्रस्तुति के लिए अलंकार का प्रयोग होता है। संगीत के संदर्भ में किसी विशिष्ट वर्ण समुदाय अथवा क्रमानुसार नियमबद्ध स्वर समुदायों को अलंकार कहते हैं। पं. शार्ङ्गदेव के अनुसार **'विशिष्ट वर्णसंदर्भम् अलंकारं प्रचक्षते। –संगीत रत्नाकर**

आधुनिक विद्वान अलंकार को पल्टा कहकर भी सम्बोधित करते हैं। इनकी रचनाविधि में एक निश्चित क्रम रहता है। अलंकार के प्रारम्भ में स्वरों का जो एक विशिष्ट क्रम लिया जाता है, उसी क्रम के प्रत्येक स्वर को प्रारम्भिक स्वर मानकर आरोह निर्मित किया जाता है। इसी नियम का पालन उसके अवरोह में उसके विपरीत क्रम से किया जाता है, यही अलंकार है। अलंकार का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है –

आरोह – सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सं

अवरोह – सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे स।

प्रत्येक राग में विभिन्न अलंकारों की रचना कर उनका अभ्यास करने से हाथ (वादन के लिये) अथवा कन्ठ (गायन के लिये) की तैयारी होती है, स्वर ज्ञान में लाभ होता है तथा राग का विस्तार करने में सहायता मिलती है। राग में पारंगत होने के लिये उसके अलंकारों का अभ्यास अत्यधिक लाभप्रद है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 1.7

1. संगीत के संदर्भ में अलंकार से क्या तात्पर्य है?
2. अलंकार की अन्य संज्ञा क्या है?
3. अलंकार के क्या उपयोग हैं?

आपने क्या सीखा

1. संगीत

(i) संगीत दो शब्दों के मेल से बना है – सम्+गीत

(ii) संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य तीनों कलाओं का समावेश है।

(iii) तीनों कलाओं में गायन मुख्य है।

(iv) संगीत की दो पद्धतियाँ हैं – उत्तरी हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति तथा दक्षिणी कर्नाटक संगीत पद्धति।

(v) दक्षिणी पद्धति दक्षिण के चार प्रान्तों में तथा उत्तरी पद्धति शेष भारत में प्रचलित है।

(vi) दोनों पद्धतियों में कुछ समानताएं तथा कुछ विभिन्नताएं हैं।

2. नाद

(i) नाद प्राण तथा अग्नि के संयोग से उत्पन्न होता है।

(ii) नाद के दो भेद – आहत तथा अनाहत हैं।

(iii) आहत नाद – संगीतोपयोगी, अनाहत नाद–संगीतोपयोगी नहीं

(iv) आहत नाद दो वस्तुओं के घर्षण से उत्पन्न होता है, अनाहत नाद – स्वयंभू–होता है।

(v) आहत नाद की तीन विशेषताएं – तारता, तीव्रता तथा गुण।

तारता से तात्पर्य – नाद का ऊँचा–नीचापन।

तीव्रता से तात्पर्य – नाद का धीमा और तेज़ होना।

गुण से तात्पर्य – नाद की जाति।

टिप्पणी

3. श्रुति

(i) नाद का छोटे से छोटा रूप श्रुति।

(ii) श्रुति संख्या के विषय में मत – बाईस, छियासठ तथा अनन्त।

(iii) बाईस श्रुतियों के मत को अधिक मान्यता।

4. स्वर

(i) स्वर की परिभाषा।

(ii) स्वरों की संख्या।

(iii) वैदिक स्वरों का विकास तीन से सात।

(iv) लौकिक स्वर सात।

(v) लौकिक स्वरों के नाम।

(vi) सप्तक की बाईस श्रुतियों पर स्वरों की स्थापना।

(vii) लौकिक स्वर– सात शुद्ध, पाँच विकृत।

(viii) स्वरों के दो भेद–अचल स्वर तथा चल स्वर।

5. सप्तक

(i) सप्त स्वरों का समूह सप्तक।

(ii) तीन सप्तक – मन्द्र, मध्य, तार।

(iii) गायन और वादन की सीमा – तीन सप्तक तक।

6. वर्ण

(i) वर्ण का तात्पर्य–गायन और वादन की विभिन्न क्रियाएं।

(ii) वर्ण के प्रकार – स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी।

7. अलंकार

(i) अलंकार का अर्थ।

(ii) संगीत की सुन्दर प्रस्तुति के लिए अलंकार का प्रयोग।

(iii) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अलंकार का स्वरूप।

पाठांत प्रश्न

1. संगीत का स्वरूप क्या है? संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
2. नाद से क्या तात्पर्य है? विस्तार से लिखिए।

टिप्पणी

3. 'श्रुति और श्रुतियों की संख्या', पर अपना मत व्यक्त कीजिए।
4. 'स्वर संगीत का मधुरतम अंश है', इसकी विस्तृत व्याख्या कीजिए।
5. सप्तक से क्या तात्पर्य है? इनकी संख्या कितनी है? विस्तारपूर्वक लिखें।
6. वर्ण का संगीत के संदर्भ में क्या अभिप्राय है? कुल कितने प्रकार के वर्ण हैं, विस्तारपूर्वक लिखें।
7. अलंकार का सामान्य अर्थ क्या है? इसकी संगीत में क्या उपयोगिता है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 संगीत

1. गायन, वादन तथा नृत्य।
2. गायन।
3. दो–उत्तर भारतीय (हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति) तथा दक्षिण भारतीय (कर्नाटक पद्धति)

1.2 नाद

1. दो – 1. आहत 2. अनाहत।
2. तीन – तारता, तीव्रता तथा गुण।
3. तीव्रता नाद का छोटाबड़ापन या नाद का धीमा और तेज़ होना बताती है तथा तारता नाद का ऊँचानीचापन। गुण गायन या विशिष्ट वाद्य की पहचान बताती है।
4. योगीजन।
5. नहीं।

1.3 श्रुति

1. 'श्रवणाच्श्रृतयो मत:'।
2. तीन।
3. बाईस श्रुतियों का मत।

1.4 स्वर

1. तीन से चार, चार से पाँच तथा पाँच से सात स्वर।
2. भरत के नाट्यशास्त्र में।

टिप्पणी

3. नौ – सात शुद्ध, दो साधारण।
4. 4, 7, 9, 13, 17, 20, 22वीं श्रुति पर।
5. रे ग म ध नि।

1.5 सप्तक

1. सप्त स्वरों का समूह।
2. तीन – मन्द्र, मध्य, तार।
3. मन्द्र सप्तक में स्वरों के नीचे बिन्दी।

   मध्य सप्तक – कोई चिन्ह नहीं।

   तार सप्तक में स्वरों के ऊपर बिन्दी।
4. मन्द्र सप्तक – हृदय पर, मध्य सप्तक – कन्ठ पर, तार सप्तक – तालु तथा मस्तिष्क पर।

1.6 वर्ण

1. 'गान क्रियोच्यते वर्णः' अथवा गायन और वादन की विभिन्न क्रियाएँ।
2. चार-स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी।
3. एक ही स्वर का बार-बार प्रयोग।
4. स्वरों का चढ़ता तथा उतरता क्रम।
5. स्थायी, आरोही तथा अवरोही वर्णों का मिश्रण।

1.7 अलंकार

1. विशिष्ट वर्ण समुदाय।
2. पल्टा।
3. हाथ (वादन के लिये) अथवा कंठ (गायन के लिये) की तैयारी, स्वर ज्ञान में लाभ, राग विस्तार में सहायता।
4. स्वरों की विशिष्ट रचनाओं का क्रमानुसार आरोह-अवरोह
5. आरोह – सारेग, रेगम .....

   अवरोह – सानिध, निधप .....

टिप्पणी

पारिभाषिक शब्दावली

1. समुच्चय – संग्रह
2. भौतिक – प्राकृतिक
3. माध्यम – ज़रिया
4. वस्तु – पदार्थ
5. ध्वन्योत्पादक – ध्वनि उत्पन्न करने वाला
6. आवृत्ति – कम्पन संख्या
7. आघात – प्रहार, चोट
8. लघुतम – सबसे छोटा
9. व्युत्पत्ति – उत्पत्ति
10. निकटवर्ती – पड़ोसी
11. सम्बोधित – बुलाना
12. अनुरणनात्मक – गूँजदार
13. श्रोता – सुनने वाला
14. रंजक – आनन्द प्रदान करने वाला
15. वर्जन – प्रयुक्त न होना, मना होना
16. प्रतिष्ठित – स्थापित
17. स्वयंभू – स्वयं विद्यमान
18. उच्चारण – बोलना
19. मिश्रण – मिला हुआ
20. विस्तार – बढ़ाना
21. रचना विधि – बनाने का तरीका
22. सर्वकालीन – हमेशा रहने वाला